ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

त्रिलोचन की काव्य भाषा

अंजू सिंह
हिन्दी विभाग,
खान्द्रा महाविद्यालय,
खान्द्रा

सारांश

हिन्दी समकालीन कवियों में त्रिलाचन एक विशिष्ट नाम है और जाहिर है कि इस वैशिष्ट्य के भूत में उनकी काव्य भाषा है। वे मूलतः मनुष्य और प्रकृति के कवि रहे हैं। गॉव एवं समाज के पिछड़े तबके के लोगों के प्रति त्रिलोचन की संवेदना गहरी जुड़ी है। वे दरसल जन संस्कृति एवं लोग संस्कृति के कवि हैं। अतः प्रतिबद्धता के कारण वे अपनी कविताओं में जनपदीय संवेदना का चित्रण जनभाषा में करते रहे हैं। इसकी पड़ताल जरूरी हैं कि भाषाई स्तर पर आधुनिक हिन्दी कविता की परम्परा में कवि निराला, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन के बरस्क त्रिलोचन कहॉ ठहरते हैं और उनकी उपलब्धियॉ, सीमायें और सम्भावनायें क्या–क्या हैं?

मुख्य शब्द : काव्यभाषा, चित्रमयी भाषा, तत्सम, तत्भव, विदेशी शब्द, ध्वन्यात्मक भाषा, मुहावरेदार भाषा, अलंकारिक भाषा, जनपदीय भाषा।

प्रस्तावना

काव्य में सबसे महत्वपूर्ण है भाषा!

भावाभिव्यक्ति का ही तो साधन है भाषा। जाहिर है कि, कविता में भाषा साध्य होता है। 1873 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र यह घोषणा करते हैं–'हिन्दी नये चाल में ढली' अर्थात् खड़ी बोली हिन्दी साहित्य के आरम्भिक चरण हैं भारतेन्दु युग। द्विवेदी युग में जागरण सुधार का प्रभाव खड़ी बोली पर भी पड़ता है। खड़ी बोली हिन्दी को वस्तुतः काव्य के सिंहासन पर स्थापित करने का श्रेय जाता है छायावादियों को। प्रगतिवाद में भाषा के जनपदीय रूप पर अधिक जोर दिया गया है। प्रयोगवाद भाषा प्रयोग की दिशा में अभिनव प्रयास किया। प्रयोगवाद के बाद नई कविता ने पूर्व प्रयास को और निखार दिया। समकालीन कवि उसे जीवंत पहलुओं की विवृत्ति से जोड़ते हैं। घूमिल के अनुसार–

छायावाद के कवि शब्दों को तोलकर रखते थे।
प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोलकर रखते थे।
नई कविता के कवि शब्दों को गोलकर रखते थे।
सन् साठ के बाद के कवि शब्दों खोलकर रखते थे।[1]

त्रिलोचन उर्फ बासुदेव सिंह उर्फ त्रिलोचन शास्त्री समकालीन कवियों में 'मील के पत्थर है'। गहराई से देखने पर लगेगा कि त्रिलोचन वस्तुओं के प्रत्यक्ष दर्शन करते थे और उनके जो प्रतिबिम्ब हृदय में बनते थे वे भावचित्र बनकर उभर आते थें। कवि त्रिलोचन आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिशील त्रयी (त्रिलोचन, नागार्जुन, शमशेर) यानी तीन स्तंभों में से एक थे। ऐसे जितपे कवि धरती की मिट्टी की फसल रहे हैं, स्वाभाविक रूप में घरती के ये पुत्र समाज के श्रमिक, मजदूर किसान वर्ग के ही सुख–दुख के संसार को चित्रित करने का ध्येय रखते हैं। त्रिलोचन उपेक्षित जीवन को आद देने वाले, प्रगतिशील काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवि रहे हैं। भले ही त्रिलोचन को ये आश्चर्य लगे प्रगतिशील कवियों की जो नई लिस्ट निकली थी, उसमें इनका नाम नहीं था। प्रेमचन्द्र ने कहा था, कवि स्वभावतः प्रगतिशील होता हें त्रिलोचन के लिए यह उक्ति सम्पूर्ण लागू हो जाती है। प्रगतिशील कवियों की लिस्ट में उनका नाम हो या न हो पर वे खुद कभी अप्रगतिशील नहीं रहे। वर्तमान पर जहॉ तक परम्परा के प्रभाव का सवाल है, त्रिलोचन की नजर उस और स्वतः आकृष्ट हो जाता हे। अर्थात् तुलसीदास और निराला जैसे कवि जनता की भाषा में जनजीवन के प्रस्तोता रहे हैं। वे घोषित रूप से कहते हैं–''तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुमसे सीखी।'' तुलसी से पहले रामायण की कथा लिखी जा चुकी थी किन्तु रामायण की कथा का उन्होंने अपने ढंग से पुनः सृजन किया। संस्कृत रामायण प्रसिद्ध थी और संस्कृत के भी वे प्रकाण्ड विद्वान थे फिर भी राम की जनपक्षधरता उन्हें सबसे अधिक भाई। चरित्र के जनपक्षीय रूप को जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए जनभाषा की आवश्यता थी और ठेठ अवधी में रामचरित्र मानस की रचना करके

राम के जनपक्षीय रूप को जनता की भाषा में जनमा के सामने परोस दिया। सरहपाढ़, कबीर से लेकर निराला–नागार्जु तक, भाषा की देशी परम्परा का सुन्दर निर्वाह उपलब्ध है। हिन्दी को अभिजात्य वर्ग के चंगुल से छुड़ाकर जनता की सम्पत्ति बनाने की परम्परा की कवियों की पंक्ति में त्रिलोचन भी शामिल है। वे कहते हैं मैं, 'उस जनपद का कवि हूं।' जनपदीय संसार में नदियॉ, तालाब, हल जोतते किसान, खेत, खलिहान, जंगल, बवंडर, झांय–झांय करती दोपहर, वर्षा के समय रिमझिम करते बादल आदि होते हैं। जनपद की जिन्दगी और उसकी प्रकृति त्रिलोचन को प्रिय रही हैं। नामवर सिंह लिखते हैं, ''जीवन के प्रमी त्रिलोचन प्रकृति में भी जीवन ही देखते हैं। बल्कि प्रकृति में उनकी दृष्टि वहीं जाती है जहॉ जीवन दिखता है। वस्तुतः त्रिलोचन के काव्य का एक बड़ा भाग जीवन का महोत्सव है।''[2]

समकालीन कवि केदारनाथ सिंह त्रिलोचन की तुलना अंग्रेजी कवि टॉमस हार्डी से करते है। वे लिखते हैं ''मुझे समकालीन हिंदी कविता के बीच त्रिलोचन की स्थिति बहुत कुछ वैसी ही लगती है, जैसी आधुनिक अंग्रेजी कविता के बीच टॉमस हार्डी की। दोनों में न सिर्फ कवितजा के बल्कि अपनी सम्पूर्ण भाषिक परम्परा के श्रेष्ठ तत्व पूरी तरह मौजूद हैं।''[3] त्रिलोचन शास्त्री चिरानपट्टी गॉव के रहने वाले थे। अवध के चिरानपट्टी का जो दृश्य उनके काव्य में जीवंत हो उठे हैं उससे यह कहना गलत न होगा कि वे अवध के लोककवि रहे हैं। वे अपने पारिवारिक जीवन में कभी सम्पन्न नहीं रहे। उन्हें चिरानपट्टी से काशी, इलाहाबाद,भोपाल, दिल्ली, मध्यप्रदेश, सागर तक की यात्रा करनी पड़ी है।

इसी भ्रमणशीलता के कारण उनके काव्य संसार का वस्तुगत दायरा वृहत हुआ है। जहॉ भी जाए प्रकृति और जीवन दोनों से ही ओत–प्रोत भाव से वे जुड़े रहे। प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्ध को कहीं शंश्लिष्ट रूप से तो कहीं स्वतंत्र रूप से जो चित्रण प्रस्तुत किया है, उसका आधार जनभाषा ही रही है। त्रिलोचन भाषा के साथ बोली की ओर बढ़ते हैं– वह बोली जो जन–जन तक पहुॅच सके। तभा तो वे कहते हैं–

''कोई समझ न पाए अगर तुमारी बोली तो,
उस बोली का मतलब क्या, मौन भला है।[4]

ऋतुऍ आपस में बदलती हैं, और ऋतुओं का मनभावन प्रीााव त्रिलोचन के काव्य का बहुत बड़ा अंग बनकर उभरा है। वर्षा को ही लीजिए वर्षा किसान को बहुत प्रिय होती है–जिन्दगी जैसी। यह वर्षा किसान के मन को हरा–भरा कर देती हे। 'चैती' काव्य संकलन में, वर्षा पर प्रस्तुत मनमोहक चित्र अपनी भाषिक संरचना में बड़े आकर्षक बन पड़ी है–

''वर्षा/फुहार, कभी झींसी कभी झिंरी,
कभी रिमझिम
और कभी झर–झर बिजली चमकती है
चिरीं गिरती है। पेड़ पालो सभी कॉपते हैं
सड़कें धुली–धुली हैं।
जैसे तेल लगी त्वचा हाथी की।''[5]

इस उदाहरण में दृश्य बिम्ब अपनी पूरी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत है। झिंसी–झिंरी और रिमझिम सब गंवईं और जनपदी शब्द है। इस उदाहरण में विशिष्टताऍ हैं– ध्वनि की धारा व नॉद बिम्ब। ऋतुओं में शहद बसंत और वर्षा के सबसे अधिक चित्र त्रिलोचन के काव्य में प्रस्तुत है। चित्रकार माइकेल एंजिलों के चित्रों में बादजलों का बड़ा महत्व रहा है। जब बादल आसमान में घिर जाते हैं, हवा में तैरते है, इधर–उधर गतिशील बने रहते हैं, ऐसी स्थितियों में स्वतः बहुत सारे चित्र अंकित होते हुए नजर आतें हे। त्रिलोचन की कविता में इस तरह के चित्रों के सृजन के पीछे शब्द प्रयोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। निम्न उदाहरण दृष्टव्य है–

''संध्या ने मेघों के कितने चित्र बनाए
हाथी, घोड़े, आदमी, जंगल क्या–क्या
नहीं रच दिया और कभी रंगों से क्रीड़ा
की आकृतियॉ नहीं बनाई।'' कभी चलाये
झीने के बादल जिनमें चटकीली लाली उभर उठी थी
जिनकी आभा हरियाली पर थिरक उठी थी।''[6]

भाषा में चित्र बनाने की क्षमता में त्रिलोचन समकाली कवियों में बेजोड़ रहे हैं। निम्नलिखित उदाहरण इस संदर्भ में अवलोकनीय हैं।

1. ''दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल –सी''[7]
–अरधान, त्रिलोचन
2. ''पीपल के पत्तों ने ज्यों मुॅह खोला–खोला
त्यों चटाक से लगा तमाचा आकर लू का''[8]
–फूल नाम है एक
3. ''चैती अब पककर तैयार है, खेतों के रंग बदल गये हैं।''[9]
चैती
4.''सॉस गुलाबी कॉप रही है, ठंड से''[10]
अरधान

उक्त उदाहरणों में भावव्यंजना चमत्कृत कर देने वाली, कहीं गत्यात्मक चित्र हैं तो कही मानवीकरण का सुन्दर प्रयोग। यहॉ लगता है, त्रिलोचन भाषा समुद्र को पार कर चुके हैं। सच देखा जाए तो कवि के रूप में चिलोचन की पारदर्शिता इस भाषिक व्यंजना में है, इनकी भाषा में ध्वनि पैदा करने की क्षमता है, चित्र बनाने की क्षमता है, गति पैदा करने की क्षमता है और जनपदीय संस्कृति के सहज रूप की अभिव्यक्ति की क्षमता है।

त्रिलोचन हिन्दी, अवधी के बैसवाड़ी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू बंग्ला आदि के अच्छे ज्ञाता थे। इन सभी भाषाओं के शब्द भी उनकी कविताओं में मौजूद है। उनकी कविता तद्ीाव प्रधान भाषिक संरचना में रची–बसी है। अभिव्यक्ति में लोक प्रचलित भाषा को अपनाने की ललक सर्वत्र विद्यमान हे। वे 1955 में खुद कहते हैं–

''भाषाओं के अगम समुद्रों का अवगाहन मैनें किया।।''[11]

उनकी कविताओं में भाषा लहर मारती रहती है। वे भाषा की उॅगली पकड़कर मानव मन में नित नई अभिलाषा जगाते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा है–

''सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ,
सब कुछ, सब कुछ भाषा।
भाषा की लहरों में जवन की हलचल है,
ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है।''[12]

तत्सम प्रधान भाषा–जब उनका मन किसी वर्णन में रम जाता है तब एक सहज शब्दमय संसार का निर्माण हो जाता है। जब फूलों के बारे में वे कहते हैं तो फूलों की एक फेहरिस्त तैयार हो जाती है। उदाहरण–

''फूले है पलाश, सेमल, गुलाब, बनबेला
जामुन, नीम, लिसोढ़े। अभिनव दल आए हैं
पीपल–पाकड़ में।''13

तद्भव, प्रधान भाषा– ''दूर बाग, बस्ती,
कहार, बॉगर पर फेरा
प्रेमपूर्ण कर, दृष्टि धुले दृश्यों की गॉठी
में अपनी स्मृति बॉधी फिर परिकों की मॉटी
से धन और उठे, चातक ने पिउ–पिउ टेरा।''[14]

यहॉ कछार, बाग बस्ती, गॉठी, मॉटी टेरा आदि जनपदीय तद्भव प्रयाग है।

अंग्रेजी शब्द

''प्रगतिशील कवियों की नई लिस्ट निकली है
उसमें कही त्रिलोचन का तो नाम ही नहीं था
सब कहते हैं प्रेस छली है।''[15]

समाज की पीड़ा से त्रिलोचन हहाकार कर उठते हैं किन्तु अभिव्यक्ति से वे असंतुष्ट दिखते हैं। कहते हैं–

''पीड़ा के नीचे भाषा दबी पड़ी है,
भाषा कितना–कितना छिपा लिया करती है
रह जाता है, केवल अभिनय की उस्तादी
खेल दिखाया करती है।''[17]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि भाषा में केवल अभिनय की उस्तादी खेल दिखाया या सत्य को छिपाना उनका उद्देश्य नहीं था।

त्रिलोचन अपने को जनपद के कवि माने जनपदीय बोलियों का प्रयाग करें और उनमें मुहावरे न हो यह कैसी बात? उन्होंने बड़े सहज ढंग से अपने काव्यभाषा में मुहावरों को जगह दिया है, जेसे–

1. ''नव जीवन के बीच, धरातल की हरियाली
   हो दिन दूनी रात चौगुनी रहने वाली।''[18]
2. ''ठोक बजाकर देख लिया,
   कुछ कसर न छोड़ी
   दुनिया के सिक्के को बिल्कुल खोटा पाया।''[19]

भाषा ध्वनि संकेत है इससे मनुष्य का विचार संप्रेय बनता है। समाज में उठने वाली ध्वनि को वे शब्द रूप देते हैं। उनका मानना था कि 'अगर कोठरी में अंधकार है तो उसे अंधेरी कहने–समझाने का मुझकों पूरा अधिकार है। अर्थात् कव अपनी कविताओं में सत्य की अभिव्यंजना के लिए प्रतिबद्ध है। समाज में उठने वाली ध्वनियों की उन्हें अच्छी पकड़ है। वे स्पष्ट कहते हैं, समाज में 'अगर न हो हरियाली कहॉ दिखा सकाता हूँ।'' समाज में अन्याय को देखकर चुपी साधे हाथ पैर बॉधकर बैठे रहनेवाले कवि नहीं है इसलिए वे नये चित्र और नई भाषा देने के लिए संकल्पबद्ध हैं–

''लड़ता हुआ समाज, नई आशा–अभिलाषा
नए चित्र के साथ नई देता हूँ भाषा।''[20]

कवि मनुष्यता से प्यार करते हैं। पतनशील मनुष्यता से वे चिंतित नजर आते हैं। वे उनके लिए लिखते हैं जो जीवन की बाजी लगाकर जूझ रहे हैं, फेंके टुकड़ों पर जो कभी राजी नहीं होते। वे उनके लिए ही लिखते हैं क्योंकि वे समझते हैं ये ही आगामी मनुष्यता के निर्माता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि वास्तव में जनकवि है। और यह दोहराने की जरूरत नहीं है कि उन्होंने सबकुछ जनभाषा में लिखा है। बावजूद इसके त्रिलोचन के शब्दबद्ध और छंद कभी कभार ढीले नजर आते हैं। इससे काव्यगत शिथिलता कवित्व की कमजोर कड़ी बनकर आती है और मलयज को ये हने का मौका मिल जाता है, ''इसीलिए त्रिलोचन को पढ़ते समय एक कसाव का अनुभव होता है। कहीं–कहीं यह कसाव बहुत अखरता भी है।''21

निष्कर्ष

''तुलसी बाबा, भाषा मैने तुमसे सीखी''

त्रिलोचन के यह कहने का मतलब तुलसी की जनभाषा–प्रयोग की ओर है–यह बात स्पष्ट है। त्रिलोचन ने सही मायने में शब्दों के द्वारा जीवित अर्थों की धारा अपनी कविता में बहायी है। समाज में जिस समय जो ध्वनि निकलती है, वह उनकी कविता में प्रतिधनित हो उठती है। जनभाषा के प्रयोग में निराला, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, धूमिल के नाम सहज ही आते हें। पर इस क्षेत्र में चाहे वह शब्द चयन हो, आलंकारिकता हो बिंब व छन्द विधान हो या मुहावरेदार प्रयोग–सभी दृष्टियों से त्रिलोचन कहीं अलग ठहरते हैं। भाषा प्रयोग की दृष्टि से कहा जा सकता है। कि त्रिलोचन में असाधारण– साधारणता है। सही मायने में उन्होंने समकालीन कविता को नई भाषा दृष्टि दी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *धूमिल, कल सुनना मुझे, युगबोध प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1974।*
2. *आलाचना अंक 82, 1987, पृ0 97*
3. *प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन, डॉ0 हरनिवास पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण:2000, पृ0–20।*
4. *अनकहनी भी कुछ कहनी है, त्रिलोचन शास्त्री, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, आवृत्ति–1985, पृ0 78।*
5. *त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक–ध्रुव शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, आवृत्ति–2012, पृ0 297।*
6. *वही, पृ0–107।*
7. *वही, पृ0–347।*
8. *फूल नाम है एक, त्रिलोचन शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ0–3।*
9. *चैती, त्रिलोचन शास्त्री, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1987 पृ0–48*
10. *अरधान, त्रिलोचन शास्त्री, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, 1983, पृ0–31*
11. *त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक–ध्रुव शुक्ल पृ0–55।*
12. *वही, पृ0–55*
13. *वही, पृ0–94*
14. *वही, पृ0–109*
15. *15 वही, पृ0–90*
16. *वही, पृ0–91*
17. *वही, पृ0–89*
18. *वही, पृ0–74*
19. *वही, पृ0–77*
20. *वही, पृ0–52*
21. *वही, भूमिका पृ0–20*